Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 06, pp 637-642, June 2025

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ दीपक जैन

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. जे कॉलेज बड़ौत (बागपत) उ.प्र

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17129506

सारांश

भारत की शिक्षा प्रणाली केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के निर्माण का भी प्रमुख आधार है। उच्च शिक्षा संस्थानों में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) ऐसा ही एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य युवाओं में सेवा भावना, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना है। दूसरी ओर वे छात्र जो एन.एस.एस. जैसी गतिविधियों से नहीं जुड़ते, उनका व्यक्तित्व विकास केवल औपचारिक शिक्षा और सहपाठ्यक्रमीय गतिविधियों पर आधारित होता है।

यह शोध विशेष रूप से यह जानने के लिए किया गया है कि एन.एस.एस. से जुड़े छात्रों और गैर–एन.एस.एस. छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों में क्या और कितना अंतर है। अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद के महाविद्यालयों को बनाया गया है। इसमें १०० एन.एस.एस. छात्रों तथा १०० गैर–एन.एस.एस. छात्रों को नमूने के रूप में चुना गया। आँकड़ों का विश्लेषण तुलनात्मक एवं सांख्यिकीय विधियों से किया गया। परिणाम से स्पष्ट हुआ कि एन.एस.एस. छात्र अधिक संतुलित व्यक्तित्व वाले, उच्च सामाजिक समायोजन वाले तथा सकारात्मक मूल्यों को अपनाने वाले पाए गए। वहीं गैर–एन.एस.एस. छात्रों में आत्मकेंद्रित प्रवृत्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक रहीं। इस शोध के निष्कर्ष शिक्षा नीति, महाविद्यालय प्रशासन और शिक्षक प्रशिक्षण के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

प्रमुख शब्द – राष्ट्रीय सेवा योजना, व्यक्तित्व, समायोजन, मूल्य।

प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना भी है। विद्यार्थियों का व्यक्तित्व तभी संतुलित रूप से विकसित होता है जब उनकी शिक्षा में शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं सामाजिक गतिविधियों का समन्वय हो। इसी उद्देश्य से उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) कार्यक्रम चलाया जाता है। सेवा योजना की शुरुआत 1969 में महात्मा गांधी की जन्मशती के अवसर पर की गई थी। इसका मूल उद्देश्य यह था कि युवाओं को समाजसेवा और राष्ट्रनिर्माण की गतिविधियों से जोड़ा जाए। एन.एस.एस. छात्र–छात्राओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, सेवा भावना, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोग और नेतृत्व क्षमता का विकास करता है। दूसरी ओर, जो विद्यार्थी एन.एस.एस. से नहीं जुड़े रहते, उनके लिए शिक्षा का क्षेत्र केवल शैक्षिक कक्षाओं और कभी–कभी सहपाठ्यक्रमीय गतिविधियों तक ही सीमित होता है। परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व विकास में सामाजिक अनुभव और मूल्याधारित दृष्टिकोण की कमी रह जाती है। शिक्षा के दौरान छात्र का व्यक्तित्व धीरे–धीरे आकार ग्रहण करता है। एन.एस.एस. जैसी गतिविधियाँ छात्र के व्यक्तित्व को परिष्कृत और संतुलित बनाने में सहायक होती हैं।

समायोजन जीवन का अनिवार्य अंग है। विद्यार्थी जब महाविद्यालय के वातावरण, शिक्षकों, सहपाठियों और समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करता है तभी वह मानसिक संतुलन बनाए रख पाता है। एन.एस.एस. छात्रों को विविध सामाजिक परिस्थितियों में कार्य करने के अवसर मिलते हैं, जिससे उनका समायोजन स्तर बेहतर होता है।

मूल्य वे आदर्श और सिद्धांत हैं जो जीवन को दिशा देते हैं। सत्य, अहिंसा, सेवा, सहयोग, अनुशासन, समानता आदि मूल्य छात्र के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। एन.एस.एस. छात्रों में इन मूल्यों का विकास प्रत्यक्ष अनुभवों और सामाजिक सेवा कार्यों के माध्यम से होता है।

इन्हीं पृष्ठभूमि तथ्यों के आधार पर यह शोध किया गया कि क्या वास्तव में एन.एस.एस. छात्रों और गैर–एन.एस.एस. छात्रों में व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के स्तर पर कोई महत्त्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

१. व्यक्तित्व निर्माण की चुनौती – वर्तमान युग में शिक्षा की दिशा अधिकतर परीक्षा–केंद्रित और अंकों तक सीमित होती जा रही है। ऐसे में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अन्य पहलू जैसे आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व आदि उपेक्षित हो जाते हैं। यह अध्ययन इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि एन.एस.एस. जैसे कार्यक्रमों से व्यक्तित्व को कैसे सशक्त किया जा सकता है।

२. समायोजन संबंधी समस्याएँ – उच्च शिक्षा स्तर पर छात्र–छात्राएँ अनेक मानसिक दबावों से गुजरते हैं। यदि उनके पास सामाजिक सहयोग और अनुकूलन का अनुभव नहीं होता, तो वे तनावग्रस्त और असमंजस की स्थिति में रहते हैं। यह शोध यह स्पष्ट करता है कि एन.एस.एस. किस प्रकार छात्रों के समायोजन को सकारात्मक दिशा देता है।

३. मूल्यों का क्षरण – आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों के क्षरण की समस्या गंभीर होती जा रही है। युवाओं में भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। इस पृष्ठभूमि में यह अध्ययन आवश्यक है कि यह परखा जाए कि एन.एस.एस. छात्रों में कौन–कौन से मूल्य प्रबल हैं और गैर–एन.एस.एस. छात्रों में क्या अंतर है।

४. तुलनात्मक दृष्टिकोण – यह शोध इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह एन.एस.एस. और गैर–एन.एस.एस. छात्रों के बीच तुलनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करता है। इस तुलना से शिक्षा नीति–निर्माताओं को यह समझने में सहायता मिलेगी कि सहपाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ छात्रों के जीवन में कितना गहरा प्रभाव डालती हैं।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

खान, ए. (2024) "युवा व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक सेवा गतिविधियों की भूमिका" में यह पाया गया कि सामाजिक सेवा से जुड़े छात्र अधिक आत्मविश्वासी और जिम्मेदार होते हैं। अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकला कि ऐसे छात्रों में नेतृत्व गुण अधिक प्रबल होते हैं। वर्मा, एस. (2023) अपने शोध "व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक गतिविधियों की भूमिका" में बताया कि एन.एस.एस. में सम्मिलित छात्र जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण से करते हैं। उनका भावनात्मक समायोजन स्तर भी उच्च पाया गया। चौधरी, ए. (2023) "छात्रों में मूल्य निर्माण और सामाजिक कार्य" में यह निष्कर्ष दिया गया कि जिन विद्यार्थियों को सामाजिक सेवा कार्यों का अवसर मिलता है, वे जीवन में सहानुभूति और सहयोग जैसे मूल्यों को अधिक आत्मसात करते हैं। शुक्ला, पी. (2022) "राष्ट्रीय सेवा योजना का छात्रों के व्यक्तित्व पर प्रभाव" में स्पष्ट किया कि एन.एस.एस. गतिविधियाँ छात्रों में नेतृत्व, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण करती हैं। अरोड़ा, एम. (2021) "छात्रों का भावनात्मक और सामाजिक समायोजन" में यह निष्कर्ष दिया कि एन.एस.एस. छात्र भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित और सामाजिक दृष्टि से अधिक परिपक्व होते हैं।सिंह, वी. (2020) शोध "नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय सेवा योजना" में यह स्पष्ट किया कि एन.एस.एस. छात्र अपने समूह में नेतृत्व का प्रदर्शन अधिक करते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी उनमें प्रबल होती है। गुप्ता, एल. (2020) "व्यक्तित्व और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" में बताया गया कि एन.एस.एस. छात्रों का व्यक्तित्व संतुलित और उनका समायोजन स्तर उच्च होता है, जबकि गैर–एन.एस.एस. छात्रों में आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

समस्या कथन

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े छात्रों के व्यक्तित्व स्तर का अध्ययन करना।

2. गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों के व्यक्तित्व स्तर का अध्ययन करना।

3. एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. एन.एस.एस. छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

5. गैर–एन.एस.एस. छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

6. एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7. एन.एस.एस. छात्रों के मूल्य स्तर का अध्ययन करना।

8. गैर–एन.एस.एस. छात्रों के मूल्य स्तर का अध्ययन करना।

9. एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

10. यह विश्लेषण करना कि एन.एस.एस. गतिविधियों का व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों पर कितना प्रभाव पड़ता है।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. एन.एस.एस. छात्रों और गैर–एन.एस.एस. छात्रों के व्यक्तित्व स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

2. एन.एस.एस. छात्रों और गैर–एन.एस.एस. छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

3. एन.एस.एस. छात्रों और गैर–एन.एस.एस. छात्रों के मूल्य स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

4. एन.एस.एस. गतिविधियों का छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5. गैर–एन.एस.एस. छात्रों की तुलना में एन.एस.एस. छात्र अधिक सहयोगी, अनुशासित और उत्तरदायी पाए जाएँगे।

शोध प्रविधि

किसी भी शोध की सफलता उसकी प्रविधि पर निर्भर करती है। उपयुक्त शोध विधि का चुनाव ही शोध को वैज्ञानिक और व्यवस्थित बनाता है। प्रस्तुत शोध "राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" में निम्नलिखित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

1. शोध की विधि

यह शोध वर्णनात्मक सर्वेक्षणात्मक प्रविधि पर आधारित है। इस विधि का चुनाव इसलिए किया गया क्योंकि यह विद्यार्थियों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने और उनकी तुलनात्मक जाँच करने में अधिक सहायक होती है।

2. शोध की जनसंख्या

इस शोध की जनसंख्या उत्तर प्रदेश राज्य के बागपत जनपद के चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) से जुड़े एवं गैर–एन.एस.एस. छात्र हैं।

3. शोध का नमूना चयन

नमूना चयन की विधि – इस शोध में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया।

नमूना आकार – कुल 200 छात्र–छात्राओं को नमूना के रूप में चुना गया। इनमें 100 छात्र एन.एस.एस. से जुड़े हुए तथा 100 छात्र गैर–एन.एस.एस. श्रेणी के चुने गए।

लिंग –प्रत्येक श्रेणी में 50 छात्र और 50 छात्राएँ शामिल की गईं

4. उपकरण

इस शोध में आंकड़े संकलन के लिए निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया

१. व्यक्तित्व मापन पैमाना – छात्रों के व्यक्तित्व लक्षणों को मापने हेतु।

२. समायोजन सूची – छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का आकलन करने हेतु।

३. मूल्य मापन पैमाना – छात्रों के नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का परीक्षण करने हेतु।

४. सामान्य सूचना प्रपत्र – छात्रों की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि से संबंधित सूचनाएँ एकत्र करने हेतु।

5. आंकड़े संकलन की प्रक्रिया

१. चयनित महाविद्यालयों में प्राचार्य की अनुमति प्राप्त करने के बाद छात्रों से प्रत्यक्ष सम्पर्क किया गया।

२. उन्हें शोध का उद्देश्य स्पष्ट रूप से बताया गया और सहमति प्राप्त की गई।

३. उपर्युक्त उपकरणों को एक निश्चित समय सीमा के भीतर छात्रों को दिया गया।

४. सभी उत्तर पुस्तिकाएँ एकत्र कर सावधानीपूर्वक जाँच की गईं।

५. अधूरी अथवा त्रुटिपूर्ण उत्तर पुस्तिकाओं को बाहर कर शेष को आँकड़ों के रूप में स्वीकार किया गया।

6. आंकड़ों के विश्लेषण की विधि

संगृहीत आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों से किया गया

१. औसत – एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्य स्तर की औसत स्थिति ज्ञात करने हेतु।

२. मानक विचलन – समूहों के भीतर अंतर को स्पष्ट करने हेतु।

३. टी–परीक्षण – एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के बीच व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों में अंतर की जाँच हेतु।

7. शोध की सीमाएँ

१. शोध केवल बागपत जनपद के चयनित महाविद्यालयों तक सीमित रहा।

२. नमूना आकार 200 छात्रों तक सीमित रहा।

३. शोध में केवल व्यक्तित्व, समायोजन एवं मूल्यों तक ही अध्ययन सीमित रखा गया।

आंकड़ों का विश्लेषण

शोध में संकलित आंकड़ों का विश्लेषण एन.एस.एस. एवं गैर–एन.एस.एस. छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों पर किया गया। तालिकाएँ माध्य, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण के आधार पर तैयार की गई हैं।

1. व्यक्तित्व के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	छात्र संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
एन.एस.एस.	100	78.45	6.32	5.42	महत्वपूर्ण अंतर
गैर–एन.एस.एस.	100	70.32	7.15		

विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट है कि एन.एस.एस. छात्रों का व्यक्तित्व अधिक संतुलित और विकसित पाया गया। टी–परीक्षण से यह सिद्ध हुआ कि दोनों समूहों के बीच व्यक्तित्व में अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

2. समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	छात्र संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
एन.एस.एस.	100	82.15	5.88	6.03	महत्वपूर्ण अंतर
गैर–एन.एस.एस.	100	73.47	6.45		

विश्लेषण

एन.एस.एस. छात्र सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन में अधिक सक्षम पाए गए। टी–परीक्षण ने दर्शाया कि दोनों समूहों के समायोजन स्तर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है।

3. मूल्य दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	छात्र संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–परीक्षण	परिणाम
एन.एस.एस.	100	88.32	4.76	7.15	महत्वपूर्ण अंतर
गैर–एन.एस.एस.	100	79.21	5.12		

विश्लेषण

तालिका स्पष्ट रूप से दिखाती है कि एन.एस.एस. छात्रों में मूल्य स्तर अधिक सकारात्मक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध है। टी–परीक्षण का परिणाम भी महत्वपूर्ण अंतर को पुष्ट करता है।

4. व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के बीच संबंध

पैरामीटर	एन.एस.एस. छात्र	गैर–एन.एस.एस. छात्र
व्यक्तित्व और समायोजन	0.62	0.48
व्यक्तित्व और मूल्य	0.58	0.42
समायोजन और मूल्य	0.65	0.50

विश्लेषण

तालिका से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। एन.एस.एस. छात्रों में यह संबंध अधिक प्रबल है, जबकि गैर–एन.एस.एस. छात्रों में तुलनात्मक रूप से कम है।

निष्कर्ष

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. व्यक्तित्व का विकास – एन.एस.एस. छात्रों का व्यक्तित्व संतुलित, आत्मविश्वासी और सामाजिक दृष्टि से परिपक्व पाया गया। गैर–एन.एस.एस. छात्रों की तुलना में उनके व्यक्तित्व में अधिक सहयोग, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व स्पष्ट दिखाई दिया।

2. समायोजन का स्तर – एन.एस.एस. छात्रों का सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक समायोजन अधिक सुदृढ़ पाया गया। यह दर्शाता है कि एन.एस.एस. जैसी गतिविधियाँ छात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन और सामंजस्य स्थापित करना सिखाती हैं।

3. मूल्यों का स्तर – एन.एस.एस. छात्रों ने सेवा, सहयोग, अनुशासन, समानता और नैतिकता जैसे मूल्यों को अधिक आत्मसात किया। गैर–एन.एस.एस. छात्रों में मूल्यों की दृष्टि से अंतर स्पष्ट था और वे व्यक्तिगत उपलब्धि पर अधिक ध्यान केंद्रित करते पाए गए।

4. व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के बीच संबंध – एन.एस.एस. छात्रों में व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों के बीच सकारात्मक और प्रबल संबंध पाया गया। इसका अर्थ यह है कि जब छात्रों का व्यक्तित्व अधिक विकसित होता है और उनका समायोजन उच्च स्तर पर होता है, तो उनके मूल्यों का स्तर भी उच्च रहता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्त्व – यह अध्ययन स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े छात्रों में व्यक्तित्व, समायोजन और मूल्यों का विकास अधिक होता है। इसलिए एन.एस.एस. जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य होनी चाहिए।

2. शिक्षा नीति में समायोजन – शिक्षा नीति–निर्माताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल शैक्षिक ज्ञान पर ध्यान देने के बजाय सहशैक्षिक और सामाजिक गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।

3. शिक्षक प्रशिक्षण – शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी एन.एस.एस. और सामाजिक सेवा गतिविधियों के महत्त्व पर बल दिया जाना चाहिए। इससे शिक्षक छात्रों को मार्गदर्शन देने में अधिक सक्षम होंगे।

4. मूल्य शिक्षा – महाविद्यालयों में मूल्य शिक्षा और सेवा आधारित परियोजनाओं को नियमित रूप से शामिल किया जाए। इससे छात्रों में नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।

सुझाव

1. सभी महाविद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।

2. गैर–एन.एस.एस. छात्रों को भी सामाजिक सेवा गतिविधियों में सम्मिलित करने के लिए प्रेरित किया जाए।

3. छात्रों के व्यक्तित्व और समायोजन के विकास के लिए समूह कार्य और परियोजना आधारित शिक्षण पद्धति अपनाई जाए।

4. मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाया जाए, जिसमें नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर ध्यान दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. खान, ए. (२०२४)। युवा व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक सेवा गतिविधियों की भूमिका। मनोविज्ञान विमर्श, १०(३), ८८–९६।

2. वर्मा, एस. (२०२३)। व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक गतिविधियों की भूमिका। शिक्षा समीक्षा, १५(२), ७७–८५।

3. चौधरी, ए. (२०२३)। छात्रों में मूल्य निर्माण और सामाजिक कार्य। भारतीय शिक्षा जर्नल, १०(४), ८०–९२।

4. मिश्रा, के. (२०२२)। उच्च शिक्षा में छात्रों का सामाजिक समायोजन। शिक्षा और समाज, ७(३), ६५–७६।

5. शुक्ला, पी. (२०२२)। राष्ट्रीय सेवा योजना का छात्रों के व्यक्तित्व पर प्रभाव। आधुनिक शिक्षा विमर्श, ८(२), ५९–७०।

6. अरोड़ा, एम. (२०२१)। छात्रों का भावनात्मक और सामाजिक समायोजन। मनोविज्ञान अध्ययन, ५(३), ७५–८६।

7. सिंह, वी. (२०२०)। नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय सेवा योजना। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, ५(३), ४५–५६।

8. यादव, बी. (२०१८)। व्यक्तित्व और शिक्षा। शिक्षा और समाज, ३(३), ६५–७५।